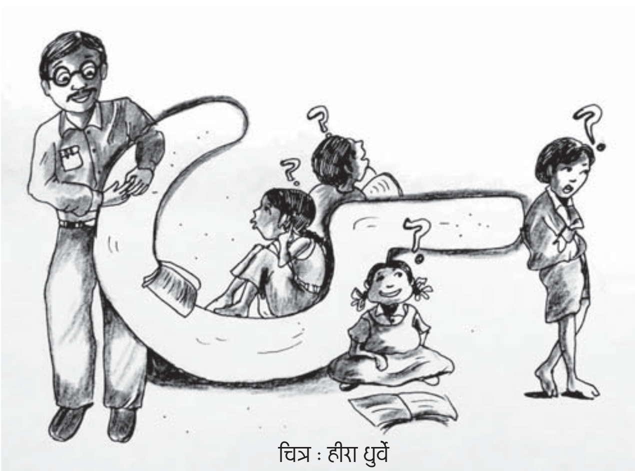
उत्तर खोजना बनाम प्रश्न बनाना

सत्य नारायण

सवालों के उत्तर देना हमारी परम्परागत शिक्षा व्यवस्था और कक्षा शिक्षण का एक अभिन्न हिस्सा है। पाठ्यपुस्तकें इसके लिए योजनाबद्ध तरीक़े से गढ़ी और इस्तेमाल की जाती हैं। रटे-रटाए उत्तर देने के कौशल को आकलन और मूल्यांकन का आधार भी बनाया जाता है। और यही हमारी स्कूली शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बना रहा है। किसी भी अवधारणा या मुद्दे को समझने, उसपर तर्क-वितर्क, उसे अन्य मुद्दों और अवधारणाओं के सन्दर्भ में समझने के लिए सिर्फ़ उत्तर खोज पाना, वो भी दिए गए प्रश्नों के लिए, काफ़ी नहीं है, बल्कि नए और तरह-तरह के प्रश्न गढ़ पाना भी ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया का अहम हिस्सा है। सत्य नारायण ने अपने इस आलेख में उत्तर खोजने की बजाय प्रश्न बनाने के कौशल पर किए गए कक्षा कार्य का अनुभव प्रस्तुत किया है। सं.

कक्षा में बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करने के साथ-साथ मैं अलग-अलग स्कूल के शिक्षकों से भी मिलता हूँ। इस दौरान शिक्षकों के साथ बच्चों के बेहतर सीखने-सिखाने सम्बन्धी सम्भावनाओं पर चर्चा होती है। मैंने पाया कि ज़्यादातर शिक्षक बच्चों को डिकोडिंग (प्रिन्ट में लिखे हुए अक्षरों या शब्दों को ध्वनियों में बदलकर उच्चारित करने के कौशल) सिखाने पर ज़ोर देते हैं और जब बच्चा शब्दों या वाक्यों को सही तरीक़े से उच्चारित कर लेते हैं तो शिक्षक समेत हम सब ये मान लेते हैं कि बच्चे को पढ़ना आ गया, जबकि सही मायने में हम पढ़ना उसे कहते हैं जब बच्चा शब्दों या वाक्यों को उच्चारित करने के साथ-साथ उसका अर्थ भी समझ पाए। बच्चों के पढ़ना सीखने पर किए गए शोध, अर्थपूर्ण पढ़ना सिखाने के लिए मुख्यतः दो कौशलों पर ज़ोर देते हैं, यह दोनों कौशल साथ-साथ चलते हैं– पहला, डिकोडिंग या शब्दों की ध्वनियों को पहचान कर प्रवाहपूर्वक उच्चारित करने का कौशल; और दूसरा है, अर्थ निर्माण का कौशल अर्थात, अनुमान लगाना, अपने पूर्व अनुभवों को जोड़कर तथ्यों को देख पाना, किसी पाठ, पैराग्राफ़ या अलग-अलग वाक्य या हिस्से को देख-समझ कर नई अवधारणाएँ बना पाना। अधिकांश शाला अवलोकनों में हमने पाया है कि इस दूसरे कौशल को जो काफ़ी महत्त्वपूर्ण है शिक्षक टाल देते हैं और पहले कौशल पर


चित्र : हीरा धुर्वे

ज़रूरत से बहुत अधिक समय दिया जाता है, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा कि इसी पर ध्यान दिया जाता है। पढ़े हुए का अर्थ नहीं समझने के कारण कक्षा का माहौल काफ़ी उबाऊ और नीरस हो जाता है। अब प्रश्न ये उठता है कि उन बच्चों में अर्थ निर्माण का कौशल कैसे विकसित किया जाए, जो डिकोडिंग करना तो सीख गए हैं लेकिन अर्थ नहीं गढ़ पाते।

इस विचार को ज़मीनी स्तर पर देखने और प्रयोग करने के उद्देश्य से मार्च 2021 को मैं एक शासकीय प्राथमिक विद्यालय पहुँचा। यह विद्यालय रायपुर से बिलासपुर मार्ग पर लगभग 25 किलोमीटर दूर एक ग्रामीण अंचल में स्थित है और अधिकांश बच्चों के अभिभावक गाँव के ही समीप फ़ैक्ट्रियों में मज़दूरी करते हुए व कृषि कार्य कर अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं।

कक्षा में पहला दिन

मैंने चौथी कक्षा में प्रवेश किया जिसमें 22 छात्र-छात्राएँ बैठे हुए थे। मैंने बच्चों से उनके हाल-चाल पूछे। कुछ बच्चों ने उत्साह के साथ तो कुछ ने धीमी आवाज़ में मुझे जवाब दिया। तब मैंने बच्चों से पूछा कि क्या हम कोई गीत या कविता गाएँ? 4-5 बच्चों को छोड़कर सबने 'हाँ' कहा। मैंने सभी बच्चों के साथ कविता 'मालती के बच्चे को सर्दी लग गई' को हावभाव के साथ गाया और पूरा कक्षा-कक्ष ऊर्जा से भर गया। कविता गाते समय मेरा विशेष ध्यान उन बच्चों पर था, जो झिझक महसूस कर रहे थे। मैंने उन बच्चों को प्रोत्साहित किया"।

कविता पूरी हो जाने के बाद मैंने पूछा, "क्या आप लोगों के पास कक्षा चौथी की हिन्दी की पुस्तकें हैं?" सभी बच्चों ने एक स्वर में "हाँ" कहा। मैंने कहा, "पाठ्यपुस्तक से कोई भी एक पाठ खोल लीजिए।" कुछ बच्चों ने कक्षा चौथी का पाठ 4 'साहसी रूपा' खोला तो कुछ ने पाठ 11 'जीत खेल भावना की' तो अन्य दो-तीन बच्चों ने दूसरा पाठ खोला। अंजनी की ओर इशारा करते हुए मैंने पूछा, "मुझे बताओ कि पाठ के अन्त में कितने प्रश्न दिए गए हैं?"



चित्र : हीरा धुर्वे

अंजनी ने एक-दो पन्ने पलटने के बाद कहा, "सर, पाठ 4 में 7 प्रश्न दिए हुए हैं।" फिर मैंने योगिता से पूछा, "क्या तुम पहला प्रश्न पढ़ना चाहोगी?" योगिता ने पहला प्रश्न पढ़ा : 'कहानी पढ़कर रूपा के बारे में अपने शब्दों में लिखो?' दूसरा प्रश्न पढ़ने के लिए मैंने लक्ष्य को कहा। लक्ष्य ने दूसरा प्रश्न पढ़ा : 'रूपा को साहसी क्यों कहा गया है?' उसके बाद मैंने क्रमशः बच्चों से सभी सात प्रश्न पढ़ने के लिए कहा। फिर बच्चों से पूछा, "इस तरह किसी पाठ में दिए गए प्रश्नों के अलावा तुम लोग कितने प्रश्न बना सकते हो?" जवाब में केवल 3 बच्चों ने कहा, "सर, तीन-चार प्रश्न और बना सकते हैं।" मैंने बच्चों से कहा, "आप लोग एक ही पाठ से 20 से लेकर 100 से भी ज़्यादा प्रश्न बना सकते हो।" कक्षा के लगभग सभी बच्चे आश्चर्यचकित होकर मुझे देखने लगे कि ऐसे कैसे बना सकते हैं? मैंने कहा, "मैं अभी आपको करके दिखाता हूँ।"

सबसे पहले मैंने श्यामपट्ट पर लिखा : 'राम और रहीम दोनों अच्छे मित्र थे। आज सुबह 10:00 बजे दोनों ने गायत्री मन्दिर के सामने एक सफ़ेद घोड़ा देखा' (गायत्री मन्दिर इसलिए लिखा क्योंकि उनके गाँव के पास में ही गायत्री मन्दिर था)।

उसके बाद मैंने बच्चों से कहा, "अब मैं आप लोगों से उपर्युक्त वाक्यों से प्रश्न बनाकर पूछूँगा। जिनको पता होगा वो अपना हाथ ऊपर करेंगे और जिनसे पूछूँगा उत्तर केवल वही बताएँगे।" मैंने बच्चों से पहला प्रश्न पूछा, "राम और रहीम कौन थे?" प्रश्न सुनते ही एक के बाद एक कक्षा के सारे बच्चों ने अपना हाथ ऊपर किया। मैंने चेहरे पर मुस्कान के साथ सहज भाव से उस बच्चे को उत्तर बताने के लिए कहा जिसने सबसे आख़िरी में हाथ उठाया था। उस बच्चे ने धीमी आवाज़ में कहा, "राम और रहीम दोनों अच्छे मित्र थे।" मैंने सभी बच्चों को उसके लिए तालियाँ बजाने को कहा। दूसरा प्रश्न एक ऐसे बच्चे (राहुल) की ओर इशारा करते हुए पूछा, जो मुझे लगा कि कुछ कहना या बताना तो चाह रहा है, लेकिन बताने में अभी भी झिझक महसूस कर रहा है। मैंने उससे पूछा, "कौन अच्छे मित्र थे?" मैंने राहुल की तरफ़ मुस्कुराते हुए दोबारा पूछा, "राहुल, कौन अच्छे मित्र थे?" उसने धीरे से कहा, "राम और रहीम।" मैंने सभी बच्चों को उसके लिए भी तालियाँ बजाने को कहा। इसके बाद बच्चों से कहा कि श्यामपट्ट पर लिखे हुए वाक्यों से मैंने दो प्रश्न बनाकर बताए। इस वाक्य से और कौन-कौन से प्रश्न बन सकते हैं? तभी योगिता नाम की छात्रा ने कहा, "सर, इसमें एक और प्रश्न बन सकता है।" योगिता ने तीसरा प्रश्न बनाते हुए कहा, "10:00 बजे गायत्री मन्दिर के सामने राम और रहीम ने क्या देखा?" मैंने योगिता को कहा, आपने बहुत बढ़िया प्रश्न बनाया।" इसके बाद मैंने सारे बच्चों की हौसला अफ़ज़ाई करते हुए ज़्यादा-से-ज़्यादा प्रश्न बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। तभी सामने बैठे लक्ष्य ने कहा, "सर, एक प्रश्न और बन सकता है।" उसने चौथा प्रश्न बनाते हुए कहा, "गायत्री मन्दिर के पास किस-किस ने घोड़ा देखा?" इसी तरह एक के बाद एक प्रश्न आने का सिलसिला जारी था। आकाश ने पाँचवाँ प्रश्न बनाते हुए कहा, "घोड़े के सामने क्या था?" आकाश का यह प्रश्न मुझे अजीब-सा



चित्र : हीरा धुर्वे

लगा क्योंकि प्रश्न का उत्तर मुझे ख़ुद समझ नहीं आ रहा था। इसलिए मैंने उसी बच्चे से पूछा, “बेटा, घोड़े के सामने क्या था? इस वाक्य में तो इस प्रश्न का उत्तर ही नहीं है।” तब बच्चे ने कहा, “गायत्री मन्दिर के सामने घोड़ा था तो घोड़े के सामने गायत्री मन्दिर हो सकता है।” वास्तव में यह बात मेरे लिए बहुत रोचक थी। आकाश के द्वारा उत्तर बताने पर कक्षा के सारे बच्चों ने तालियाँ बजाकर उसकी तार्किक सोच का सम्मान किया।

अल्का ने छठवाँ प्रश्न बनाते हुए कहा, “कौन-से मन्दिर के सामने दोनों मित्रों ने घोड़ा देखा?” इसी तरह सातवाँ प्रश्न आया कि गायत्री मन्दिर के सामने कौन-कौन थे? आठवाँ प्रश्न आया कि गायत्री मन्दिर के सामने कितने सफ़ेद रंग के घोड़े थे? नवाँ प्रश्न आया कि राम और रहीम ने कौन-से रंग का घोड़ा देखा? इस दौरान मैं हर बार नया प्रश्न आने पर बच्चों को प्रोत्साहित करता रहा। उनके लिए पूरी क्लास में तालियाँ बजने लगीं और इसी तरह दसवाँ प्रश्न आया, किसने सफ़ेद रंग का घोड़ा देखा? बच्चों द्वारा बनाए गए सभी प्रश्नों को हम एक-एक करके श्यामपट्ट पर लिखते गए। इसके बाद मुझे लगा कि बच्चे प्रश्न निर्माण सम्बन्धी कौशल पर अपनी समझ बना कर चुके हैं। कक्षा के सारे बच्चे बहुत ही सक्रिय और उत्साहित नज़र आने लगे। उनको कक्षा-कक्ष का यह वातावरण बहुत सहज लगने लगा, क्योंकि उनकी भावनाओं और अनुभवों को यहाँ पूर्णतः स्वीकृति मिल रही थी।

बच्चों के सामने अगली चुनौती रखना

अब मैंने बच्चों को चौथी कक्षा का पाठ 11 ‘जीत खेल भावना की’ निकालने के लिए कहा। बच्चों ने फटाफट पन्ने पलटते हुए पाठ खोल लिया। मैंने बच्चों से पूछा, “पाठ के अन्त में दिए गए इन सातों प्रश्नों के अलावा भी क्या हम इसी तरह के अन्य प्रश्न बना सकते हैं?” अब लगभग सभी बच्चों ने कहा, “हाँ सर, हम कई प्रश्न बना सकते हैं”, तब मैंने बच्चों से एक-एक करके पूछना शुरू किया। लक्ष्य तुम कितने प्रश्न बना सकते हो? लक्ष्य ने कहा, “सर, मैं इसी पाठ से 40-50 से भी ज़्यादा प्रश्न बना सकता हूँ।” इसी दौरान प्रभा ने पूर्व में अभ्यास कराए गए वाक्य की ओर इशारा करते हुए कहा, “सर, अभी हम लोग जिस प्रकार प्रश्न बना रहे थे, क्या उसी प्रकार से प्रश्न बनाने हैं?” मैंने कहा, “बिलकुल प्रभा! उसी तरह प्रश्न बनाने हैं।” तब मैंने देखा बच्चों के अन्दर उत्साह भर गया था और उन्होंने एक के बाद एक प्रश्न बनाना शुरू कर दिया, परन्तु इतने में छुट्टी का समय हो गया था। बच्चों ने जो सवाल बनाए उनके कुछ उदाहरण बॉक्स में दिए गए हैं। इन सवालों के प्रकार और पूछने के उद्देश्य अलग-अलग हैं।

- किसके ऑफ़िस के आगे भीड़ लगी हुई थी?
- सुरेश को पट्टी लगवाने कहाँ ले जाया गया?
- सुरेश का सिर कैसे फूटा?
- सुरेश और महेश के बीच झगड़ा कब हुआ था?
- सुरेश किसमें हमेशा फ़र्स्ट आता था?
- किसको अस्पताल ले जाकर पट्टी कराई गई?
- महेश की आँखों से आँसू क्यों निकल पड़े?
- महेश ने सुरेश को क्यों मारा होगा?
- सुरेश ने प्रधानाध्यापक से महेश की शिकायत क्यों नहीं की, इसके पीछे क्या कारण हो सकता है?
- सुरेश का महेश के प्रति व्यवहार आपको कैसा लगा?
- कहानी का सारांश बताइए ?
- क्या सुरेश ने महेश को माफ़ करके सही किया?
- यदि आप सुरेश की जगह होते तो क्या करते?

कुछ सवाल तथ्य या जानकारी पाने के लिए हैं, तो कुछ अनुमान लगाकर जवाब देने के लिए हैं, तो कुछ सवाल तार्किक आधार पर जवाब देने से जुड़े हैं, तो कुछ समझाने और कहानी का सार संक्षेप बताने आदि पर आधारित हैं।

छुट्टी की घण्टी बजने से पहले हमने बच्चों के बीच यह प्रस्ताव रखा कि कल जब आप लोग स्कूल आएँगे तो क्या स्वयं ज़्यादा-से-ज़्यादा प्रश्न बनाकर लाना चाहेंगे? लगभग सभी बच्चों ने उत्साह के साथ एक स्वर में कहा, "हाँ सर, हम लोग घर से प्रश्न बनाकर लाएँगे।" मैंने बच्चों को चुनौती देते हुए कहा, "देखते हैं सबसे ज़्यादा प्रश्न कौन और कितने बनाकर लाता है।" और इस तरह हमने छुट्टी की घण्टी बजा दी। लगभग सभी बच्चे बहुत ही उत्साह से यह कहते हुए, कि मैं 70 से भी ज़्यादा प्रश्न बना दूँगा, कि मैं तो 100 से भी ज़्यादा प्रश्न बना दूँगा, घर की तरफ़ चल पड़े।

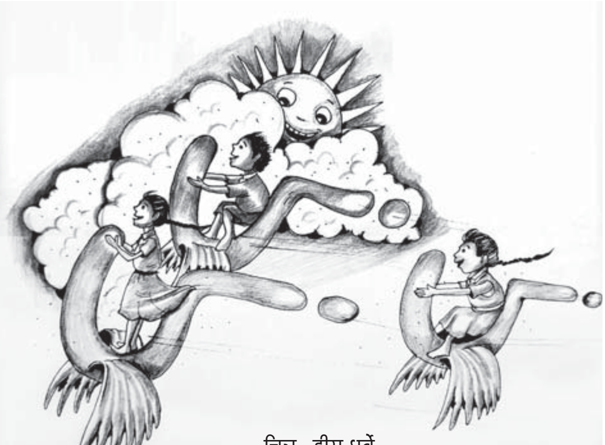
कक्षा में दूसरा दिन

दूसरे दिन जब लगभग सारे विद्यार्थी कक्षा में आए तो वे एक दूसरे को अपने-अपने प्रश्न बताने लगे। कक्षा की शुरुआत *'मेरे मामा जी के घर में इक छोटी सी बिलैया रे'* नामक कविता को हावभाव के साथ गाते हुए, की गई। बच्चों का उत्साह और आपस में बातचीत ये समझने के लिए काफ़ी था कि बच्चों ने प्रश्न बनाए हैं और बनाते समय उनको काफ़ी मज़ा भी आया है।

पलक ने 280 प्रश्न बनाए और यशोदा ने 164 प्रश्न बनाए थे। इन दोनों के अलावा 4 अन्य बच्चे भी एक ही पाठ से 100 से अधिक प्रश्न बनाकर लाए थे। मंजू ने 36 प्रश्न बनाए थे। पर यहाँ यह महत्त्वपूर्ण नहीं था कि किसने कितने प्रश्न बनाए। मुख्य बात यह थी कि सभी बच्चों ने ख़ुद के प्रयासों से बनाए थे, और ये पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों से अलग भी थे। इस दौरान कक्षा का माहौल भी काफ़ी सहज और सकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ था।

बच्चों को दो समूहों में बाँटना

इसके बाद हमने कक्षा के बच्चों को दो समूहों में बाँट दिया और कहा कि अब आप एक दूसरे समूह से आपके द्वारा बनाए गए प्रश्नों को बिना देखे पूछेंगे। पहला समूह एक प्रश्न दूसरे समूह से पूछेगा और दूसरा समूह एक प्रश्न पहले से। इस प्रकार पहले समूह ने दूसरे से और दूसरे ने पहले समूह से 3 राउण्ड प्रश्न पूछे। उसके बाद छात्रा प्रिया ने सुझाव दिया कि सर, ऐसा करते हैं हम लोग पहले 5 प्रश्न समूह 'बी' से पूछेंगे, उसके बाद समूह 'बी' पाँच प्रश्न हम समूह 'ए' वालों से पूछेगा। यहाँ मैंने देखा कि बच्चों के अन्दर डर, भय या झिझक की जगह सक्रियता, उत्साह और स्वयं करके सीखने की भावना एवं आत्मविश्वास ने ले ली थी। प्रिया द्वारा दिए गए सुझाव को सबके सामने रखते हुए मैंने पूछा कि क्या हमें प्रिया का सुझाव मान लेना चाहिए? लगभग सारे बच्चों ने एक स्वर में हामी भर दी। फिर समूह 'ए' के बच्चों ने लगातार पाँच प्रश्न समूह 'बी' से पूछे और समूह 'बी' ने भी वही किया। इस दौरान इस


चित्र : हीरा धुर्वे

बात का विशेष ध्यान रखा कि समूह के सभी बच्चों को प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने के बराबर अवसर मिलें।

इसी तरह एक दूसरे के समूह से जब प्रश्न पूछने और उत्तर देने की प्रक्रिया पूरी हो गई तब बच्चे बहुत उत्साह के साथ बोलने लगे कि सर, अब हम पाठ 12 'कुकू और भूरी' से इसी तरह प्रश्न बनाएँगे और समूह में बैठकर एक दूसरे से प्रश्न करेंगे। एक अन्य बच्चे ने कहा कि सर, इस बार हम पहले से भी ज़्यादा प्रश्न बनाएँगे।

हम देख सकते हैं कि इन पूरी प्रक्रियाओं में बच्चे काफ़ी उत्साहित और आत्मविश्वास से लबरेज़ दिख रहे हैं। हर एक बच्चा अपनी क्षमतानुसार सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा बना हुआ है।

हम सब यह अच्छी तरह से जानते हैं कि वाक्य या अनुच्छेद को बिना समझे प्रश्न निर्माण नहीं किया जा सकता। अतः उपर्युक्त गतिविधि में बच्चों के द्वारा अपनी क्षमतानुसार पूरे पाठ से प्रश्नों का निर्माण करना दिखाता है कि बच्चों ने इस प्रक्रिया में वाक्य या अनुच्छेद को डिकोड मात्र नहीं किया है, बल्कि एक ही वाक्य को कई तरह से देखने व समझने के साथ ही अर्थ निर्माण के कौशलों का भी प्रयोग किया है। यहाँ हमने बच्चों को स्वयं करके सीखने के लिए प्रेरित किया और ज़रूरत पड़ने पर एक मार्गदर्शक, सुविधादाता या मित्र की तरह काम किया, जिसकी पैरवी *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* भी करती है। इसके अलावा, एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस कक्षा में बच्चे स्वयं चुनौती ले रहे हैं और उसको पूरा करने के लिए योजना बना रहे हैं। कक्षा के संचालन के लिए बच्चे नियम बना रहे हैं व उसका पालन कर भी रहे हैं।

क्या इस प्रकार की गतिविधि से बच्चे के अन्दर स्वयं करके सीखने का कौशल विकसित नहीं होगा? क्या यह बाल-केन्द्रित और प्रजातांत्रिक कक्षा-कक्ष का एक अच्छा उदाहरण नहीं है, जिसकी पैरवी हमेशा शिक्षाविद् एवं शिक्षा मनोवैज्ञानिक भी करते हैं? शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार हरेक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पाने का अधिकार है। ऐसे में क्या हमें कक्षा के कुछ होशियार बच्चों पर ही ध्यान देने की बजाय अपनी शिक्षण प्रक्रिया में बदलाव लाकर ऐसी प्रक्रिया का चुनाव नहीं करना चाहिए, जिसमें हर एक बच्चे की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो? क्या हमें बच्चों को एक-एक चीज़ बताने की बजाय स्वयं करके सीखने के लिए प्रेरित और सहज वातावरण निर्मित नहीं करना चाहिए, जहाँ शिक्षक की भूमिका केवल और केवल एक सहजकर्ता, मार्गदर्शक या मित्र की हो? क्या बच्चों को गृहकार्य देने की बजाय चुनौती नहीं देना चाहिए क्योंकि गृहकार्य बच्चों पर शिक्षकों के द्वारा थोपा गया एक काम होता है, जिसे ज़्यादातर बच्चे समस्या के रूप में लेते हैं, जबकि चुनौती बच्चे के द्वारा स्वयं स्वीकार किया हुआ अवसर होता है, जिसे पूरा करने के लिए वह अपनी पूरी ऊर्जा लगा देता है? मेरी आधारभूत समझ ये कहती है कि इसपर हमें ज़रूर विचार करना चाहिए।

सत्य नारायण यादव आठ वर्ष से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आपने सहायक प्राध्यापक के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में शिक्षा मनोविज्ञान का अध्यापन कार्य किया है। विगत तीन वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, रायपुर में भाषा के रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्य कर रहे हैं।

सम्पर्क : satya.yadav@azimpremjifoundation.org